



साईं सृजन पटल

ई-न्यूज लैटर

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

प्रवेशांक

अगस्त 2024

पृष्ठ-10

निःशुल्क

साहित्यकार डॉ० सविता मोहन द्वारा किया 'साईं सृजन पटल' का उद्घाटन



देहरादून (जोगीवाला) 9 अगस्त। पूर्व उच्च शिक्षा निदेशक व साहित्यकार डा. सविता मोहन ने आर.के.पुरम में 'साईं सृजन पटल' का रिबन काटकर विधिवत उद्घाटन किया। अपने संबोधन में बताए मुख्य अतिथि डा. सविता मोहन ने कहा कि लेखन और सृजन में वातावरण का अत्यंत महत्व होता है। स्वरथ माहौल में सकारात्मक विचार लेखनी के माध्यम से प्रकट हो जाते हैं। उत्तरकाशी में मेरे शिष्य रहे और कर्णप्रयाग पीजी कॉलेज से सेवानिवृत्त हुए प्राचार्य डा. के.एल.तलवाड़ ने एक अभिनव पहल करते हुए सृजन पटल की स्थापना की है। साहित्य के क्षेत्र में रुचि रखने वाले युवा इस पटल से लाभान्वित हो सकते हैं। विशिष्ट अतिथि के रूप में कोटद्वार पीजी कॉलेज से सेवानिवृत्त प्राचार्य डा. जानकी पंवार ने कहा कि डॉ. तलवाड़ उत्तरकाशी में मेरे सहपाठी रहे हैं। सेवानिवृत्ति के चार माह बाद ही सृजन पटल की स्थापना कर उन्होंने लेखन कार्य को बढ़ावा देने की सकारात्मक पहल की है। डॉ. तलवाड़ ने अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस सृजन पटल के माध्यम से युवाओं को समाचार लेखन, प्रेस फोटोग्राफी, रिपोर्टिंग, फीचर लेखन और अभिलेखों के रखरखाव और प्रस्तुतीकरण की समुचित जानकारी साझा की जायेगी। मेधावी विद्यार्थियों को स्व. साईं दास तलवाड़ छात्रवृत्ति भी प्रदान की जायेगी।

शेष पृष्ठ छह पर....

इंडियन क्रिएटिव मीडिया प्रा.लि. के ऐपिकल स्टॉफ को दिए टिप्प



डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank'
पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड
Former Chief Minister, Uttarakhand
पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार
Former Education Minister, Govt. of India



6-सी, प्रीतम रोड, डालनवाला, देहरादून
उत्तराखण्ड (हिमालय)-248001
6-B, Pritam Road, Dalanwala, Dehradun
Uttarakhand, (Himalaya)-248001
दूरभाष: 0135-2718899
Email: drrameshpokhriyal@gmail.com



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि 'साईं सृजन पटल' द्वारा मासिक ई-न्यूज लैटर का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि इस पटल के माध्यम से उत्तराखण्ड के रचनाकारों, कलाकारों, नवोदित लेखकों और छात्र-छात्राओं को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक बेहतर मंच प्राप्त होगा।

मैं 'साईं सृजन पटल मासिक ई-न्यूज लैटर' के सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल और समस्त हितधारकों को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

(डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक')

स्थायी निवास: 37/1, रवीन्द्र नाथ टैगोर मार्ग, विजय कालोनी, देहरादून, (उत्तराखण्ड हिमालय)-248001
Permanent address: 37/1, Ravindra Nath Tagore Marg, Vijay Colony, Dehradun, Uttarakhand-248001

डोईवाला महाविद्यालय के टॉपर्स को मिलेगी श्री साईं दास तलवाड़ मेधावी छात्रवृत्ति

साईं सृजन पटल डोईवाला कालेज में देगा 'समाचार लेखन की कला' का निःशुल्क प्रशिक्षण

डोईवाला, 13 अगस्त। साईं सृजन पटल के संयोजक डा. के.एल.तलवाड़ ने मंगलवार को शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला के नवनियुक्त प्राचार्य डा. डी.पी.भट्ट का पुष्प गुच्छ देकर और शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया। डा. भट्ट ने बेरीनाग महाविद्यालय से स्थानांतरित होकर डोईवाला महाविद्यालय में तीन अगस्त को कार्यभार ग्रहण किया। डा. तलवाड़ चक्रराता महाविद्यालय के प्राचार्य बनने से पूर्व छह वर्षों तक डोईवाला कालेज में विभिन्न जिम्मेवारियां संभाल चुके हैं। एक भावनात्मक लगाव के चलते उन्होंने इस अवसर पर घोषणा की, कि बीए, बीएससी, बीकॉम व एमए फाइनल ईयर के टॉपर्स को 2100 रुपये, मेडल व प्रशस्तिपत्र देकर समारोहपूर्वक सम्मानित किया जायेगा। इसके अलावा कॅरिअर काउंसलिंग के अंतर्गत 15 दिवसीय 'समाचार लेखन कला' का निशुल्क प्रशिक्षण भी दिया जायेगा।



शेष पृष्ठ छह पर...



संपादकीय



इसी साल 31 मार्च को डा.शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग (चमोली) से प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त होने के कुछ दिनों पहले से सोचने लगा था कि सेवानिवृत्ति के बाद अब आराम किया जायेगा। लेकिन अप्रैल माह के प्रथम पखवाड़े में ही लगने लगा कि अभी आराम का वक्त नहीं है बल्कि कुछ नया किया जा सकता है। कुछ नया करने के लिए अपने आवास की तीसरी मंजिल पर एक कार्यालय बना जिसे अपने स्वर्गीय पिता के नाम पर **साईं सृजन पटल** नाम दिया गया। चालीस वर्षों की सेवा से जुड़ी सभी स्मृतियों (पूँजी सदृश) को इसमें सहेज दिया गया। समय लगा पर 9 अगस्त को प्रो. सविता मोहन जी और प्रो. जानकी पंवार जी के हाथों इसका शुभारंभ भी हो गया। इस पटल के माध्यम से इच्छुक विद्यार्थियों को समाचार लेखन की कला, फीचर व साक्षात्कार लेखन, प्रेस फोटोग्राफी, पेपर किलिंग्स और अभिलेखों के समुचित रख-रखाव की जानकारी देने की इच्छा है। साथ ही विचार आया कि यदि साईं सृजन पटल द्वारा एक मासिक न्यूज लैटर भी प्रकाशित किया जाये, जिसमें उत्तराखण्ड से जुड़े शोध-पत्र, उभरती प्रतिभाओं की कला, पहाड़ के व्यंजन और पर्यटन के साथ-साथ उत्तराखण्ड की प्राचीन परम्पराओं आदि को समुचित स्थान मिले। इसी सोच के साथ यह प्रयास किया गया है। उच्च शिक्षण संस्थाओं के टॉपर्स को छात्रवृत्ति भी दी जायेगी। संपादकीय दायित्वनिर्वहन के साथ ही डोईवाला महाविद्यालय के अपने पूर्व विद्यार्थी और अब एक स्थापित पत्रकार अंकित तिवारी को भी सहसंपादक की जिम्मेदारी दी गई है। अब इस प्रयास का मूल्यांकन सुधी पाठकों को करना है यदि प्रयास सही दिशा में है तो न्यूज लैटर प्रकाशन को निरंतरता अवश्य दी जायेगी।

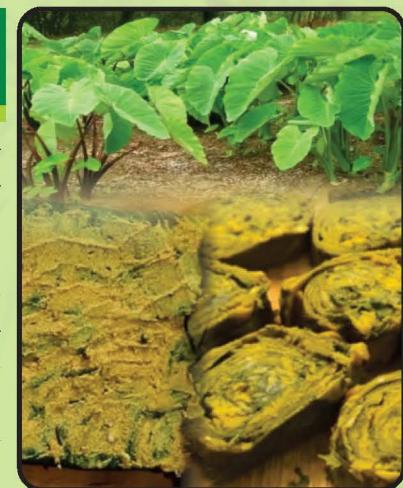
आपका- डा.के.एल.तलवाड़

न्यूज लैटर में प्रकाशित लेखों में तथ्यों सम्बन्धी विचार लेखकों के निजी हैं।



स्वाद-पहाड़ का

अरबी के पत्तों के पैतुड़



आज हम गढ़वाली व्यंजन पैतुड़ बनाना सीखेंगे जो कि बरसात में विशेष रूप से बनाये जाते हैं। अरबी जिसे गढ़वाली में पिंडालू कहते हैं। इसके पत्तों से शानदार व्यंजन तैयार होगा जिसे पैतुड़, पतोड़, गुंडला भी कहते हैं।

सामग्री—अरबी के 7 से 10 पत्ते, बेसन एक कटोरी, आटा आधा कटोरी, नमक-मिर्च स्वादानुसार, एक चुटकी हींग, आधा चम्मच हल्दी, आधा, चम्मच गरम मसाला, आधा चम्मच जख्या, एक नींबू/अमचूर, चार चम्मच सरसों का तेल, अदरक लहसुन का पेरस्ट (यदि चाहें तो), विधि—सभी अरबी के पत्तों को एक-एक कर साफ पानी में धो लें। उसके बाद पत्तों की डंडी अथवा रेशे निकालें। एक बर्तन में बेसन, आटा, नमक, मिर्च, अमचूर, हल्दी, गरम मसाला इत्यादि मिलाकर घोल तैयार कर लें। घोल ऐसा तैयार करेंगे जैसा कि पकौड़ियों के लिए किया जाता है। घोल को इतना फेंटना है कि कोई गांठ न रह जाए। घोल को एक किनारे रख लें।

अरबी के पत्तों को थाली अथवा परात में एक के ऊपर एक रखकर बेसन के घोल को पूरे पत्ते पर फैलाएं। मतलब कि प्रत्येक पत्ते पर बेसन का घोल लगेगा और एक पत्ते के ऊपर दूसरा पत्ता और इसी तरह सभी पत्तों को एक पत्ते के ऊपर रखते जाएंगे। पत्तों को चारों तरफ से मोड़ कर उसका एक रोल बना दें। अब इस रोल को कढ़ाई अथवा प्रेशर कुकर में भाप दें। यदि प्रेशर कुकर में भाप देंगे तो उसकी सीटी निकाल दें। दस-बारह मिनट माध्यम आंच में भाप देने के बाद रोल को निकाल दें। जब ठंडा हो जाए रोल के छोटे-छोटे मनपसंद आकार देकर टुकड़े कर दें। कढ़ाई में चार चम्मच तेल डालें गर्म होने पर जख्या का तड़का लगाएं। इसके पश्चात एक-एक टुकड़े को कढ़ाई में डालकर दें और करीब ढाई-तीन मिनट तक सेकें। ठंडा होने पर परोसें। (क्योंकि गर्म खाने पर गले में खराश होती है। और अब देखिए आपके अरबी के स्वादिष्ट पैतुड़ तैयार हैं। आप इसे चटनी या सॉस के साथ परोस सकते हैं।)

डॉ. शोभा रावत

असिस्टेंट प्रोफेसर— हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वारा, गढ़वाल।



Uttarakhand is a Paradise for an Artist: Anjali Thapa



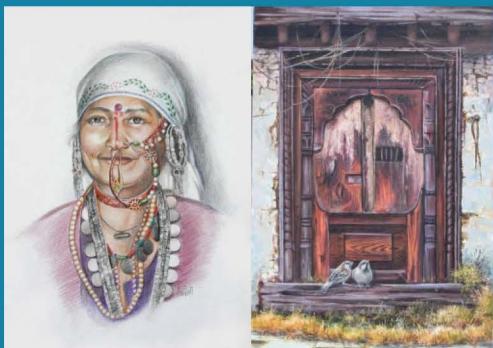
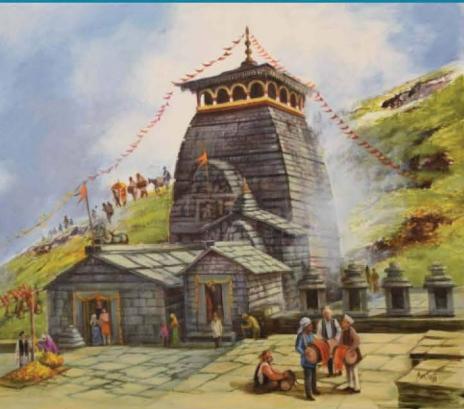
◀ Mrs. Anjali Thapa



Mrs. Anjali Thapa is an alumni of Sir J.J School of Art Mumbai. Born in Belgavi Karnataka. Married to an army officer from Uttarakhand Capt. Raghubir Thapa. She has extreme passion for realistic style of painting which is amply reflected in her works. Travelled across the country and captured the nature, places and people as they existed. Freelance artist since 1980. Decided to settle in Dehradun Uttarakhand after the retirement of her husband. For her, Uttarakhand is a paradise for an artist. She captured its flora fauna, culture, people and Ancient Temple architecture on her canvases. Versatility is her forte be it a medium or subject. Her paintings adorn many VIP guest rooms, army regimental center museums, army training centers, prestigious army messes and clubs. To name a few, National Defense College and Army house New Delhi, Indian Military Academy Dehradun and Lal Bahadur Shastri academy Mussoorie. Participated in many group shows and art workshops at state and national level including that at Lalit Kala Academy New Delhi. She was a visiting faculty at Graphic Era fine arts academy Dehradun. She runs her own art gallery and sells her body of work under the name Chitrangali.



**PORTRAIT OF FAMOUS WRITER FROM UTTARAKHAND
Mr. Raj Kanwar made in oil colours by Anjali Thapa**



“औखांण”

डॉ० अन्थवाल का यह प्रयास हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है



25 अप्रैल 1975 को ग्राम अन्थवाल गांव, पट्टी हिन्दाव, ठिहरी गढ़वाल में जन्मे डा. वेणीराम अन्थवाल वर्तमान में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग चमोली में इतिहास विभाग में प्राध्यापक हैं। उत्तराखण्ड के लोक-जीवन की समृद्ध परंपरा ‘औखांण’ (लोक-कहावत) शीर्षक से उनकी पुस्तक 'India Book of Records' का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद 22 दिसंबर 2021 को 'Asia Book of Record' का प्रमाण पत्र भी हासिल कर चुकी है। इसमें दो राय नहीं है कि उनकी यह पुस्तक एक अनमोल ग्रंथ है। हम सब उत्तराखण्डवासियों के लिए यह गर्व का विषय है। वर्तमान में यद्यपि उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन तीव्रता से हुआ है तथा औखांण हासिये पर चला गया है तथापि डा. अन्थवाल का यह प्रयास हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। उनकी सहर्ष सहमति से उनकी उक्त पुस्तक से चुनिंदा औखांण प्रत्येक अंक में पाठकों के सम्मुख रखेंगे।

◀ डॉ० वेणीराम अन्थवाल



● याक आना कु सौदा अर बाजार म खलबली

(एक आने का सामान और बाजार में खलबली) अर्थात् जिसके पास कम बुद्धि होती है, वह ज्यादा दिखाने का प्रयास करता है जबकि बुद्धिमान हमेशा संयम से काम लेता है। अथवा छोटे से काम के लिए ज्यादा ढिंढोरा पीटना या ज्यादा प्रचार करना।

● खायू गास, लगी बाट

(खाया और रास्ते लगा) अर्थात् मतलब का संबंध रखना अर्थात् समाज में कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो अपने मतलब के समय तो संबंध जोड़ लेते हैं और मतलब निकल जाने के बाद संबंध तोड़ देते हैं।

● मुंड फुण्डू मुन्ड्यासु बांधी मैं भी टण्डेल

(सर पर पगड़ी बांध दी तो मैं भी कलाबाज) अर्थात् मात्र पहनावे से व्यक्ति के गुण-दोषों का पता नहीं लग सकता। किसी के साथ धोखा करने या दिखावा करने के प्रसंग में इस कहावत का प्रयोग होता है या अपना प्रभाव दिखाना।

● काचु लाखड़ु मुड़ि जान्दु, अर सुख लाखड़ु टुटि जान्द

(कच्ची लकड़ी आसानी से मुड़ जाती है और सलामत रहती है, परंतु सूखी लकड़ी मुड़ती नहीं बल्कि टूट जाती है।) इस औखांण का भाव, इस अर्थ में है कि लघीला व्यवहार करने वाला व्यक्ति हमेशा सबका चहेता बना रहता है, जबकि कठोर व्यवहार करने वाले को लोग पसंद नहीं करते।

● बुद्ध्यों कु ब्ल्यों अर औलों कु स्वाद बल बाद म औंदू

अर्थात् वृद्ध व्यक्ति की कही बात तथा आंवले का स्वाद बाद में आता है।

● 'दानक ग्वरु क बल दांत न खुर'

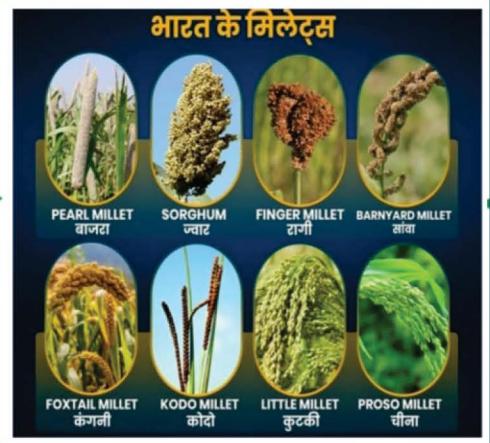
अर्थात् बिना परिश्रम के जो वस्तु प्राप्त हो वह बेकार ही होती है।

● कत्था बल काणी अर रात ब्याणी

अर्थात् बेकार कहानी में पूरी रात गुजर गई।

● हरिद्वार चपाई गुदड़ी अर क्यदार पिटी भैंसू

अर्थात् दण्ड और पुरस्कार का निर्धारण निष्पक्ष भाव से करना चाहिए।



श्रीअन्न (मिलेट्स): स्वास्थ्य एवं सतत विकास की कुंजी

मोटा अनाज जिसे श्रीअन्न, पौष्टिक धान्य या मिलेट्स भी कहा जाता है, एक सामूहिक शब्द है जो अनेक छोटे बीज वाले फसलों को संदर्भित करता है, जिनकी खाद्य फसल के रूप में मुख्य रूप से शुष्क, कम नमी वाले क्षेत्रों की कम उर्वरा शक्ति वाली भूमि पर खेती की जाती है। श्रीअन्न को 'पोषण का पावर हाउस' भी कहा जाता है। ज्वार, बाजरा, कोदो, झांगोरा, मडुवा, कौणी, कुटकी एवं चेना प्रमुख श्रीअन्न हैं जिनमें कार्बोहाइड्रेट्स के साथ—साथ पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, वसा, विटामिन, रेशे एवं आवश्यक खनिज भी मिलते हैं। रामदाना और कुदू को छद्म मिलेट्स की श्रेणी में रखा जाता है। श्रीअन्न का इतिहास 5000 वर्ष से भी ज्यादा पुराना है। सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त अवशेष श्रीअन्न के प्राचीन होने के पुरुत्ता प्रमाण हैं। इसके अलावा अनेक भारतीय प्राचीन साहित्य में भी श्रीअन्न का विवरण मिलता है जिनमें यजुर्वेद, सुश्रुत संहिता, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, अबुल फजल के आईन-ए-अकबरी में बाजरा, अभिज्ञानशाकुंतलम् में कौणी एवं कन्नड़ कवि कनकदास की रामधन्या-चरित्र में मडुवा का उल्लेख महत्वपूर्ण है। ये फसलें हमारी थाली का अहम हिस्सा रही हैं परंतु हरित क्रांति के बाद चावल और गेहूं ने इन्हें पीछे छोड़ दिया है। श्रीअन्न को फिर से मुख्य धारा में लाने की कोशिश की जा रही है। वर्ष 2018 को भारत द्वारा 'राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष' एवं वर्ष 2023 को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष' घोषित किया जाना इस कड़ी में एक सार्थक प्रयास है।

श्रीअन्न प्रकृति के भी साथी माने जाते हैं क्योंकि इनको उगाने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। ये कम पानी और निम्न उपजाऊ भूमि पर आसानी से उगाए जा सकते हैं। चूँकि श्रीअन्न जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से मुक्त है और इन पर जलवायु विषमताओं का ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता इसलिए इन्हें 'जलवायु लचीली फसल' (Climate resilient crop) भी कहा

जाता है। इसके अलावा इनका भंडारण भी अत्यंत आसान है और इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा श्रीअन्न उत्पादक देश है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रीअन्न को बढ़ावा देने और मांग सृजन के साथ वैश्विक खपत बढ़ाना भारत के लिए विश्व शक्ति बनने में एक सकारात्मक कदम होगा। आज जब पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन के साथ खाद्य सुरक्षा के प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार कर रहा है श्रीअन्न का सबसे बड़ा उत्पादक देश भारत समाधान के साथ अखिल विश्व का नेतृत्व कर सकता है। श्रीअन्न को ज्यादा से ज्यादा अपनाकर हम संयुक्त राष्ट्र द्वारा तय किए गए सत्रह सतत विकास लक्ष्यों में से छह लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में श्रीअन्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। कृषि अनुकूल कम भूमि होने के कारण श्रीअन्न एक बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है जिसमें कम संसाधनों का उपयोग करके ज्यादा उत्पादन किया जा सकता है। मडुवा, झांगोरा, कौणी एवं रामदाना (छद्म मिलेट) उत्तराखण्ड के प्रमुख श्रीअन्न हैं। श्रीअन्न की वैश्विक मांग में बढ़त के साथ ही देवभूमि यदि इस क्षेत्र में एग्रो स्टार्टअप प्रारंभ करे तो राज्य की आर्थिकी को संवारने एवं बेरोजगारी दूर करने में यह एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। श्रीअन्न विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं विशेषकर जीवन-शैली रोगों से बचाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। बदलती जीवन शैली में स्वस्थ शरीर के लिए आहार में श्रीअन्न को जोड़ना आवश्यक और अपरिहार्य हो गया है।

डॉ इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)
ईमेल – pandey197@gmail.com



अजय कुमार

चमोली जनपद के दूरस्थ ग्राम थापलीडांग से उभर रही एक प्रतिभा: अजय कुमार



जनपद चमोली के दूरस्थ ग्राम थापली डांग (बणियास—बेनिताल) के अत्यंत साधारण परिवार से ताल्लुक रखने वाले अजय कुमार के हाथों में कलाकारी का जादू है। पिता श्री किशोर कुमार खेती—बाड़ी और मेहनत—मजदूरी करके किसी तरह अपना परिवार चला रहे हैं। अजय को हर तरह के पोट्रेट बनाने में गजब की महारत हासिल है।

कर्णप्रयाग कालेज में बीए पंचम सेमेस्टर में अध्ययनरत छात्र अजय को यदि सही दिशा और मंच मिल जाये तो वह उत्तराखण्ड का नाम रोशन कर सकता है। उल्लेखनीय है कि अजय ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तराखण्ड द्वारा निर्वाचितों को समावेशी, सुगम और सहभागी बनाना विषय पर आयोजित ऑनलाइन पोस्टर प्रतियोगिता में प्रतिभाग करके जनपद चमोली में प्रथम व राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर 25 जनवरी 2024 को अजय को देहरादून में आयोजित सम्मान समारोह में तीन हजार रुपए का चेक पुरस्कार स्वरूप व प्रशस्तिपत्र दिया गया था।

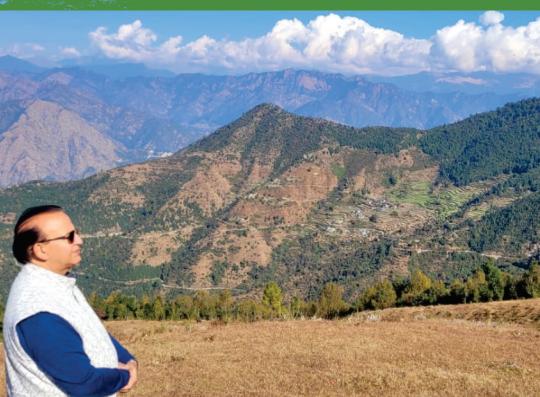
सैर-सपाटा



प्रकृति की सुरम्य गोद में बसा है पर्यटन स्थल— बेनिताल



जनपद चमोली में कर्णप्रयाग मुख्यालय से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर समुद्र तल से 8000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है 'बेनिताल'। लगभग 3 किलोमीटर के दायरे में फैले घास के मैदान (बुग्याल) यहां का विशेष आकर्षण है। हिमालयी पर्वत श्रृंखला के नयनाभिराम दृश्य यहां पहुंचने वालों का मन मोह लेते हैं। जिला प्रशासन के प्रयासों से इसे एस्ट्रो विलेज के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिससे यहां खगोलीय घटनाओं, एस्ट्रोनॉमिकल ऑब्जर्वेशन और टूरिज्म के बढ़ने से यहां स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। औषधीय वृक्षों जड़ी-बूटियों और अपने अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य के कारण यह स्थल उत्तराखण्ड की धरोहर है। राज्य सरकार की उदार फिल्म नीति के तहत यह फिल्म निर्माता—निर्देशकों के भी अत्यंत उपयोगी हो सकता है।



के.के.द्विवेदी,
असिस्टेंट प्रोफेसर भौतिकी,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग (चमोली)

Success Story: सफलता की कहानी

पत्रकारिता की यात्रा: शिक्षा से स्वतंत्र लेखन तक का सफर



पत्रकारिता एक ऐसा क्षेत्र है, जो समाज की धारा को दिशा देने का कार्य करता है। इसके माध्यम से न केवल सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है, बल्कि जनमानस को जागरूक और सशक्त भी किया जाता है। इस यात्रा में प्रारंभिक शिक्षा, शिक्षक का मार्गदर्शन, और व्यक्तिगत लगाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मेरा नाम अंकित तिवारी है, मेरा जन्म उत्तराखण्ड के देहरादून जिले के पुन्नीवाला गांव में हुआ। मेरी प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती शीशु मंदिर, भोगपुर और इंटरमीडिएट शिक्षा सरस्वती विद्या मंदिर, कोटी भानियावाला से पूरी हुई। इसके बाद मैंने सूचना प्रौद्योगिकी में स्नातक की पढ़ाई प्रदेश के सबसे बड़े महाविद्यालय डीएवी कॉलेज, देहरादून से की।

2014 में शहीद दुर्गा मल्ल स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिंदी विषय में स्नातकोत्तर कक्षा में प्रवेश लिया। इस दौरान मैंने छात्र राजनीति में भी कदम रखा और स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष में ही विश्वविद्यालय प्रतिनिधि के पद पर शानदार जीत हासिल की।

10 दिसंबर 2015 मेरे जीवन का महत्वपूर्ण दिन था, जब महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं मास्टर ट्रेनर मेरे गुरु प्रो.(डा.) के. ए.ल. तलवाड़ द्वारा 'समाचार लेखनी कला' विषय पर 15 दिवसीय निःशुल्क प्रशिक्षण आयोजित किया गया। संयोगवश,

इस दिन मेरा जन्मदिन भी था। इस प्रशिक्षण ने मेरे जीवन में पत्रकारिता के प्रति लगाव को और अधिक गहरा किया।

प्रो. तलवाड़ सर के कुशल मार्गदर्शन में मुझे महाविद्यालय के न्यूज लैटर 'संस्था दर्पण' के छात्र संपादक की भूमिका निभाने का अवसर मिला और पत्रकारिता की बारीकियों को समझने का मौका प्राप्त हुआ। इस प्रशिक्षण ने न केवल समाचार लेखन कला को सिखाया बल्कि मुझे अपनी अभिव्यक्ति और विचारों को सटीक रूप से प्रस्तुत करने का भी सलीका दिया।

पत्रकारिता के इस शुरुआती अनुभव ने मुझे राष्ट्रीय सहारा डोईवाला में संवाददाता के रूप में कार्य करने का अवसर दिया। वर्तमान में, मैं राष्ट्रीय सभ्यता समाचार पत्र, स्पष्ट एक्सप्रेस समाचार पत्र, दैनिक सांघ्य समाचार पत्र देवपथ, ए.जे.ग्रामीण न्यूज पोर्टल, देवभूमि समाचार पोर्टल, पहचान एक्सप्रेस, दैनिक सत्यवाणी आदि समाचार पत्रों एवं पोर्टलों में स्वतंत्र रूप से सेवा दे रहा हूँ। अपनी शिक्षा के साथ-साथ अपने पत्रकारिता के सफर को निरंतर जारी रखा और देहरादून डीएवी कॉलेज से एलएलबी की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। वर्तमान में मैं स्पृश हिमालय विश्वविद्यालय, डोईवाला, देहरादून से हिंदी विभाग में शोध छात्र के रूप में नामांकित हूँ।

पत्रकारिता के प्रति मेरा यह समर्पण और उत्साह आज भी कायम है। एक स्वतंत्र पत्रकार के रूप में, मैं समाज की सच्चाई को उजागर करने, जनता की आवाज को बुलंद करने और समाज को सही दिशा दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ। पत्रकारिता के माध्यम से समाज के प्रति मेरे इस योगदान को आगे भी जारी रखने का मेरा संकल्प है।

यह यात्रा न केवल मेरे लिए सीखने का अवसर रही है, बल्कि समाज के प्रति मेरी जिम्मेदारी को भी मजबूत किया है। मेरा उद्देश्य है कि मैं अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकूँ और पत्रकारिता के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में अपनी पहचान बना सकूँ।





युग युगीन उत्तराखण्ड के इतिहास और संस्कृतियों का पुनरावलोकन

उत्तराखण्ड की मौखिक लोक परंपराओं में प्रतिबिंबित संस्कृति एवं इतिहास एक ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से लोकगीत, लोकगाथा, लोकवार्ता में परिलक्षित ऐतिहासिक तथ्यों की

जांच पड़ताल करने की कोशिश रहेगी। उत्तराखण्ड की मौखिक परंपराओं में जागरी/ हुड़किया औजी/ बाजगी केंद्र में होता है जो लोक संस्कृति के संवाहक होते हैं, सदियों से शिल्पकार वर्ग लोक गाथाओं को मौखिक रूप से गाकर पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित करते हैं। पंडित तारादत्त गैरोला एवं ई. एस ओकले ने बाधा नामक हुड़किया से लोकगाथाओं का संकलन कर लिपिबद्ध कर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जिसका शीर्षक था "हिमालयन फोकलोर"। राजस्थान में लोकगाथाओं को "पंवारा" कहते हैं, वस्तुत जोधाओं की पद्यबद्ध गाथाओं को पंवाड़ा कहा जाता है। उत्तराखण्ड में भड़ों की गाथाएं हुड़किया द्वारा सुनाई जाती थी, भड़वाली या भड़ वार्ता कहलाती है (डबराल, संवत् २०५० वि: ५)। हुड़किया जोधाओं की तर्ज पर गाथाओं को सुनाते थे, यूरोप में हुड़किया के लिए प्रायः वार्ड या मिनिस्ट्रल शब्द का प्रयोग होता है (डबराल, ५) जान पड़ता है कि यूरोप में मध्यकालीन नाइट जोधाओं की गाथा मिनिस्ट्राल बड़े ओजस्वी स्वर में सुनाकर जनता का मनोरंजन करते थे (डबराल, एस.पी., २०५० वि: ५)। वाल्टर स्कॉट वस्तुतः कवि और उपन्यासकार थे, उन्होंने काव्य में मिनिस्ट्रल शब्द का प्रयोग जोधाओं की गाथाएं सुनाने वालों के लिए होता है। मानव संचार का एक रूप है, जिसमें

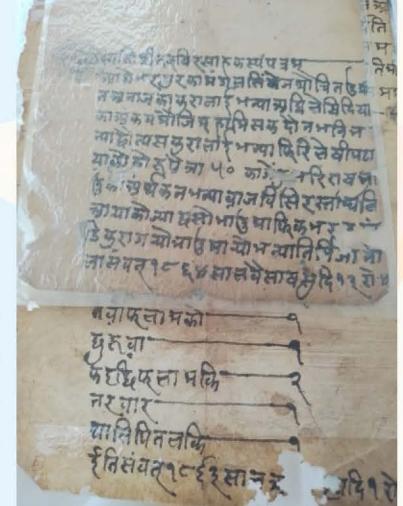
ज्ञान, कला, विचार और सांस्कृतिक सामग्री पीढ़ी दर पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्राप्त संरक्षित और प्रसारित करती है। मौखिक परंपराओं में उत्तराखण्ड की लोकगाथाएं प्रसिद्ध हैं, जिनमें रिखोला लोदी, माधो सिंह भंडारी, पांच भाई कठैत, सूरज कुंवर, तिलू रौतेली, कालू भण्डारी, गढ़ सुमिरियाल आदि हैं, उक्त पवाड़ों में

ध्वंस इतिहास तो परिलक्षित होता ही है लेकिन सामाजिक व्यवस्था भी मुखरित होती है। माधो सिंह भण्डारी के पवाड़े में शौर्य, वीरता, बलिदान एवं सामूहिकता प्रतिबिंबित होता है, माधो सिंह की ऐतिहासिकता असंदिग्ध है। मलेथा गांव, बद्रीनाथ श्रीनगर मार्ग में बाई और अवस्थित है, अब सिंचित खेत हैं, जहां हरियाली दिखती है। अद्यतन मलेथा गांव सिंचित एवं उपजाऊ क्षेत्र रहा है, पहले असिंचित खेत थे, इन खेतों में कोदा वी गहथ की कृषि होती थी, माधो सिंह भंडारी श्रीनगर के दरबार में महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों में था।

माधो सिंह ने मलेथा गांव में कूल (नहर) बनाकर सिंचाई करने का संकल्प लिया। जान पड़ता है कि सोलहवीं शताब्दी में महिपतशाह (1527–1552) के राज्यकाल में चार सेनानायक हुए जिसमें रिखोला लोदी, माधु सिंह भंडारी, मौलाराम का पूर्वज बनवाड़ी दास तुनवार, और दोस्त बैग मुगल आदि रहे। पृथ्वी पति शाह (१५५२ ईस्वी १६१४ ईस्वी) के शासनकाल के अभिलेखों में माधो सिंह भंडारी, भगतसिंह भंडारी, गजे सिंह भंडारी, अमर सिंह भंडारी नामक राज्याधिकारी थे। देवप्रयाग में रघुनाथ मंदिर के कपाट पर जो राजतपत्र लगाया था, उस पर माधो सिंह भंडारी का, उसके पुत्र वजीर गजे सिंह भंडारी का तथा उसकी पत्नी मथुरा बौराणी का नाम है। उत्तराखण्ड में कुछ ऐतिहासिक गीत मिलते हैं जिनमें गोरख्यानी एवं मुगल आक्रमण से संबंधित हैं, पंवार वंश से संबंधित श्रीनगर के दरबारीयों के नामों का उल्लेख लोकगीतों/ जागरों में होता है जैसे शंकर डोभाल और पुरिया नैथानी के नाम सम्मिलित हैं।

बारहवीं शताब्दी और सत्रहवीं शताब्दी के बीच बाजीगर, कलाबाज और कहानीकार सहित एक पेशेवर मनोरंजनकर्ता, एक धर्मनिरपेक्ष संगीतकार व वायु वाद्ययंत्र बजाने वाला होता है। जापानी समाज मिनयो लोक संगीत पारंपरिक था। ग्रीक मिथकों को आरंभ से मौखिक काव्य परंपरा में प्रचारित किया गया। १८ वीं शताब्दी ईसा पूर्व में मिनोआन और मार्झसिनियन गायकों द्वारा शुरू की गई।

डा. विजय बहुगुणा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय डाकपत्थर, देहरादून



फोटो गैलरी



